

अक्षय तृतीया और आदिवासी समाज : परंपरा, उत्सव और बचपन की सुरक्षा का प्रश्न



प्यारे किसान भाइयों, बहनों, स्वराज साथियों, प्यारे बच्चों, संगठन के पदाधिकारियों एवं वाग्धारा टीम के साथियों, आप सभी को जय गुरु! जय स्वराज! जय जगत!

आप सभी से इस अंक के माध्यम से संवाद कर रहा हूँ। इस बार हमारा उद्देश्य "माँ (प्रकृति/धरती) की देखभाल से जुड़ी महत्वपूर्ण बातों" पर चिंतन और चर्चा करना है।

जैसा कि हर माह की चर्चा में हम आपसे आग्रह करते हैं, हमें अपनी संस्कृति, मौसम और स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप सामुदायिक प्रयास करने चाहिए। ऐसे प्रयास, जो हमारी आदिवासी संस्कृति और स्वराज के मूल्यों से मेल खाते हों और हमारी प्रकृति, हमारे विचारों तथा आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित रख सकें।

चर्चा के विषय कई हो सकते हैं - चाहे वह कृषि हो, आजीविका, स्वास्थ्य या शिक्षा, परंतु सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हम अपनी स्थानीय समस्याओं को स्वयं समझें और उनके समाधान के लिए बाहरी निर्भरता को कम करते हुए सामुदायिक स्तर पर प्रयास करें। यही स्वराज का मूल आधार है।

यदि हम अपने पूर्वजों की परंपराओं को समझकर उन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचा पाते हैं, तो हम अपने क्षेत्र की संस्कृति, प्रकृति और जीवन को सुरक्षित रख सकेंगे।

गर्मी का मौसम हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। बरसात आने से पहले यदि हम अपने खेतों की पाल (मिडू) को मजबूत नहीं करते हैं, तो मिट्टी और पानी दोनों बह जाते हैं। एक बार मिट्टी का नुकसान हो जाने पर उसे पुनः बनाना बहुत कठिन होता है। इसलिए मिट्टी और पानी दोनों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।

इसी प्रकार, यदि हम अपने परिवार और समाज की "पाल" को मजबूत नहीं करेंगे, अर्थात् अपनी वर्तमान पीढ़ी का सही मार्गदर्शन नहीं करेंगे और उन्हें अपनी संस्कृति से नहीं जोड़ेंगे—तो वे भी मिट्टी और पानी की तरह हमारे हाथों से निकल सकते हैं। तब हम अपनी विरासत को सुरक्षित नहीं रख पाएंगे।

अंत में, प्रत्येक माह की पत्रिका के माध्यम से मैं आप सभी से यह आग्रह करता हूँ कि इन संदेशों को एक परिवार से दूसरे परिवार, एक गांव से दूसरे गांव तक, अपने सभी संबंधियों और पूरे समुदाय तक अधिक से अधिक पहुंचाएं।

आप सभी को पुनः बहुत सारी शुभकामनाएं।
गर्मी की जुताई के इस समय में हम अपनी मिट्टी को पूर्ण रूप से खुली हवा के लिए खोल दें, ताकि वह पुनः जीवंत हो सके और आने वाले मौसम के लिए तैयार हो सके।

जय गुरु। जय स्वराज। जय जगत!

आपका अपना
जयेश जोशी



अक्षय तृतीया, जिसे हमारे आदिवासी क्षेत्रों में अखा तीज के नाम से जाना जाता है, भारतीय संस्कृति का एक अत्यंत पवन और शुभ पर्व है। वर्ष 2026 में यह पर्व 19 अप्रैल को मनाया जाएगा। इस दिन को नई शुरुआत, समृद्धि, दान व सामाजिक बंधनों के उत्सव के रूप में देखा जाता है।

आदिवासी समाज में यह पर्व विशेष महत्व रखता है। यह केवल धार्मिक आस्था का दिन नहीं, बल्कि सामूहिकता, रिश्तों की मजबूती और सांस्कृतिक पहचान का जीवंत उत्सव है। इस समय नोतरा की परंपरा के तहत बड़ी संख्या में विवाह आयोजित होते हैं, जिनमें पूरा समुदाय सहभागी बनता है। लेकिन इस उत्सव के बीच एक गंभीर और चिंताजनक सच्चाई भी सामने आती है। अखा तीज के दौरान बाल विवाह के मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि होती है, जो बच्चों के अधिकारों और उनके भविष्य पर गहरा प्रभाव डालती है।

परंपरा और वास्तविकता : एक जरूरी सवाल

आदिवासी समाज की सबसे बड़ी ताकत उसकी परंपराएँ और प्रकृति के साथ उसका संतुलन है। यह समाज जीवन के हर चरण को सम्मान देने की सीख देता है। लेकिन जब हम कम उम्र में बच्चों की शादी कर देते हैं, तो हम उसी संतुलन को अनजाने में तोड़ देते हैं।

जिस उम्र में बच्चों को -

- शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए,
- पारंपरिक ज्ञान और जीवन कौशल सीखना चाहिए,
- प्रकृति और समाज के साथ अपने संबंध को समझना चाहिए,

उसी उम्र में वे विवाह व जिम्मेदारियों के बोझ तले दब जाते हैं। यह केवल एक सामाजिक प्रथा नहीं, बल्कि बच्चों के बचपन, अधिकार और संभावनाओं का हनन है।

बाल विवाह : एक कुप्रथा और उसके दूरगामी प्रभाव

बाल विवाह का प्रभाव केवल एक बच्चे तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरे समुदाय के भविष्य को प्रभावित करता है।



◆ **शिक्षा पर प्रभाव** :- कम उम्र में विवाह होने से बच्चे, विशेषकर लड़कियाँ, अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पातीं। इससे उनकी आत्मनिर्भरता और निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित होती है।

◆ **स्वास्थ्य पर प्रभाव** :- कम उम्र में मातृत्व लड़कियों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बनता है। इससे मातृ मृत्यु और शिशु मृत्यु दर बढ़ने की संभावना रहती है।

◆ **आर्थिक प्रभाव** :- अशिक्षा और जल्दी जिम्मेदारी आने से परिवार और समुदाय में गरीबी का चक्र जारी रहता है।

◆ **सामाजिक प्रभाव** :- बाल विवाह लैंगिक असमानता को बढ़ावा देता है और बच्चों को मानसिक व सामाजिक दबाव में डाल देता है।

कानूनी दृष्टिकोण : बाल विवाह एक अपराध
भारत में बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम, 2006 के तहत :

- लड़कियों की न्यूनतम विवाह आयु 18 वर्ष,
- लड़कों की न्यूनतम विवाह आयु 21 वर्ष, निर्धारित की गई है।

इनसे कम उम्र में विवाह कराना कानूनन अपराध है, जिसके लिए सजा और जुर्माने का प्रावधान है। इस कानून का उद्देश्य केवल दंड देना नहीं, बल्कि बच्चों के अधिकारों और उनके भविष्य की रक्षा करना है।

स्वराज दृष्टिकोण : समुदाय ही समाधान है।
आदिवासी समाज की सबसे बड़ी शक्ति उसकी सामूहिक चेतना और सहभागिता है। यदि यही समुदाय ठान ले, तो बाल विवाह जैसी कुप्रथा को पूरी तरह समाप्त किया जा सकता है।

◆ **बाल स्वराज समूह की भूमिका** :- बच्चों का यह समूह अपनी आवाज उठाकर, संवाद के माध्यम से और जागरूकता फैलाकर बाल विवाह को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

◆ **ग्राम स्वराज समूह की भूमिका** :- गाँव स्तर पर यह समूह सामूहिक निर्णय लेकर, निगरानी रखकर और सामाजिक दबाव बनाकर बाल विवाह को रोक सकता है।

◆ **सामूहिक जिम्मेदारी**

- हर परिवार जागरूक बने।
- हर व्यक्ति जिम्मेदारी ले।
- हर विवाह की आयु सुनिश्चित की जाए।

◆ **हेल्पलाइन का उपयोग** :- बाल विवाह की सूचना मिलने पर तुरंत चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 पर संपर्क किया जा सकता है।

असली परंपरा क्या कहती है?

हमारी परंपराएँ हमें जीवन के हर चरण का सम्मान करना सिखाती हैं। बचपन सीखने, बढ़ने और सपने देखने का समय है, न कि जिम्मेदारियों का बोझ उठाने का। इसलिए, अखा तीज पर सच्चा शुभ कार्य वही है, जहाँ बच्चों का बचपन सुरक्षित रहे, उनकी शिक्षा जारी रहे और उनका भविष्य सशक्त बने।

निष्कर्ष : परंपरा के साथ जिम्मेदारी

अक्षय तृतीया अनंत (अक्षय) फल देने वाला पर्व है। लेकिन यह तभी सार्थक है, जब हम इसे सही अर्थों में शुभ बनाएँ।

आइए संकल्प लें :-

- हम बाल विवाह नहीं करेंगे।
- हम अपने समुदाय में बाल विवाह नहीं होने देंगे।
- हम हर बच्चे को बचपन की रक्षा करेंगे।



ऋतु का ज्ञान : प्रकृति, परंपरा और स्वराज का जीवंत संबंध

प्रकृति की लय को समझने की कला :

मानव जीवन और प्रकृति का संबंध केवल उपयोग का नहीं, बल्कि सह-अस्तित्व का है। आदिवासी समाज इस सत्य को सदियों से जीता आया है। उनके लिए ऋतुएँ केवल मौसम का परिवर्तन नहीं, बल्कि जीवन की गति, निर्णयों की दिशा व सामुदायिक व्यवस्था का आधार हैं।

"ऋतु का ज्ञान" इसी गहरी समझ का परिणाम है— जहाँ व्यक्ति, परिवार और समुदाय प्रकृति के संकेतों को पढ़कर अपने जीवन को उसके अनुरूप ढालते हैं। स्वराज के संदर्भ में यह ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें बाहरी निर्भरता से मुक्त कर स्थानीय संसाधनों पर आधारित, आत्मनिर्भर और संतुलित जीवन की ओर ले जाता है।

ऋतु का ज्ञान : परिभाषा से आगे एक जीवन-दर्शन

ऋतु का ज्ञान केवल यह जानना नहीं है कि गर्मी, वर्षा या सर्दी कब आएगी। यह एक समग्र जीवन-दर्शन है, जिसमें प्रकृति के प्रत्येक परिवर्तन को ध्यान में देखा, समझा और जीवन में अपनाया जाता है। आदिवासी समुदायों में यह ज्ञान किताबों से नहीं बल्कि अनुभव, परंपरा और सामूहिक सीख से विकसित होता है। बच्चे बचपन से ही अपने बड़ों के साथ जंगल, खेत और जल स्रोतों के बीच रहते हुए यह सीखते हैं कि—

- हवा की दिशा बदलने का क्या अर्थ है,
- कौन सा पेड़ किस ऋतु का संकेत देता है,
- कौन सी आवाज़ या पक्षी का व्यवहार आने वाले मौसम की सूचना देता है,

यह ज्ञान किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे समुदाय की साझी बौद्धिक संपदा होता है।

खेती व आजीविका में ऋतु ज्ञान की भूमिका

आदिवासी जीवन में खेती केवल उत्पादन का साधन नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ संवाद का माध्यम है। ऋतु ज्ञान इस संवाद को दिशा देता है। जब पहली बारिश की बूँदें गिरती हैं, तो यह केवल मौसम का परिवर्तन नहीं होता—यह बीज बोने का संकेत, मिट्टी के जीवित होने का संकेत और जीवन के नए चक्र की शुरुआत होती है। आदिवासी किसान इस समय को इंतजार करते हैं और उसी के अनुसार मक्का, कोदो, कुटकी, तुअर जैसी स्थानीय फसलों की बुवाई करते हैं। वे केवल कैलेंडर पर निर्भर नहीं रहते, बल्कि

मिट्टी की नमी, हवा की ठंडक और बादलों के रंग से यह तय करते हैं कि बुवाई का सही समय क्या है। इसी प्रकार फसल की कटाई, भंडारण और अगली फसल की तैयारी भी ऋतु के अनुसार ही होती है। यह प्रणाली उन्हें जोखिम से बचाती है, उत्पादन को स्थिर रखती है और बाहरी इनपुट (जैसे—रासायनिक खाद या हाइब्रिड बीज) पर निर्भरता कम करती है—जो कि स्वराज का मूल तत्व है।

भोजन, पोषण और ऋतु का संबंध

आदिवासी समाज में भोजन का सीधा संबंध ऋतु से होता है। वे हर मौसम में वहीं खाते हैं जो प्रकृति उस समय उपलब्ध कराती है। यह केवल परंपरा नहीं, बल्कि वैज्ञानिक और पोषणीय दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्षा ऋतु में जंगलों में मिलने वाली हरी सब्जियाँ, कंद—मूल और जंगली फल, शरीर को आवश्यक पोषण तत्व प्रदान करते हैं और बीमारियों से बचाते हैं। सर्दियों में मोटे अनाज और ऊर्जा देने वाले खाद्य पदार्थ शरीर को गर्म रखते हैं, जबकि गर्मी में हल्का और जल समृद्ध भोजन शरीर को संतुलित बनाकर रखता है।

यह स्थानीय और ऋतु आधारित भोजन प्रणाली न केवल कुपोषण को कम करती है, बल्कि बाजार पर निर्भरता भी घटाती है। इस प्रकार यह पोषण स्वराज की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

स्वास्थ्य, उपचार व ऋतु आधारित समझ

हर ऋतु अपने साथ कुछ विशेष स्वास्थ्य चुनौतियाँ भी लाती है। आदिवासी समुदाय इन चुनौतियों को पहले से पहचानते हैं और उनके अनुसार अपने व्यवहार और उपचार पद्धतियों को बदलते हैं।

उदाहरण के लिए, वर्षा ऋतु में मच्छरों और जलजनित रोगों का खतरा बढ़ जाता है, इसलिए वे विशेष जड़ी-बूटियों का उपयोग करते हैं और पानी को सुरक्षित रखने के उपाय अपनाते हैं। सर्दियों में शरीर को गर्म रखने के लिए विशेष आहार और औषधियों का प्रयोग किया जाता है।

यह ज्ञान आधुनिक चिकित्सा के विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि प्राथमिक और निवारक स्वास्थ्य प्रणाली के रूप में कार्य करता है, जो समुदाय को स्वावलंबी बनाता है।

प्रकृति के संकेत : जीवंत कैलेंडर

आदिवासी समाज के लिए प्रकृति ही उनका कैलेंडर है। वे पेड़ों के फूलने, पक्षियों के आने-जाने, हवा के बहाव और बादलों के रंग से ऋतु का अनुमान लगाते हैं। महुआ के फूल गिरना, आम के पेड़ों में मंजर आना, कुछ विशेष पक्षियों का दिखना— ये सभी संकेत बताते हैं कि मौसम बदल रहा है और अब जीवन के अगले चरण की तैयारी करनी है। यह प्रणाली अत्यंत सूक्ष्म और सटीक होती है, क्योंकि यह स्थानीय पारिस्थितिकी पर आधारित होती है, न कि किसी बाहरी मानक पर।

स्वराज और ऋतु ज्ञान का गहरा संबंध

स्वराज का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और स्वायत्तता है। ऋतु का ज्ञान स्वराज की नींव को मजबूत करता है। जब समुदाय ऋतुओं को समझता है, तो वह अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम होता है—चाहे वह खेती का हो, भोजन का हो, जल प्रबंधन या स्वास्थ्य का हो, इससे बाहरी बाजार, तकनीक और संसाधनों पर निर्भरता कम होती है। इस प्रकार ऋतु का ज्ञान हमें एक ऐसे समाज की ओर ले जाता है जहाँ विकास का अर्थ प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखते हुए स्थायी और न्यायपूर्ण जीवन प्रणाली बनाना है।

वर्तमान चुनौतियाँ : ज्ञान का क्षरण

आज के समय में यह अमूल्य पारंपरिक ज्ञान धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण ऋतुओं का चक्र अनियमित हो गया है, जिससे पारंपरिक संकेतों की सटीकता प्रभावित हो रही है। इसके साथ ही, आधुनिक शिक्षा और जीवनशैली के कारण युवा पीढ़ी इस ज्ञान से

दूर होती जा रही है। बाजार आधारित खेती और बाहरी तकनीकों पर बढ़ती निर्भरता भी इस ज्ञान को कमजोर कर रही है।

यदि समय रहते इसे संरक्षित और पुनर्जीवित नहीं किया गया, तो हम केवल एक ज्ञान प्रणाली नहीं, बल्कि एक संपूर्ण जीवन-दर्शन खो देंगे।

आगे की दिशा: ज्ञान से स्वराज की ओर

इस स्थिति में आवश्यक है कि हम इस ज्ञान को केवल "पुरानी परंपरा" मानकर न छोड़ें, बल्कि इसे भविष्य के समाधान के रूप में देखें। हमें चाहिए कि—

- बुजुर्गों के अनुभवों को सुनकर उनका दस्तावेजीकरण किया जाए।
- बच्चों और युवाओं को इस ज्ञान से जोड़ने के लिए प्रशिक्षण और गतिविधियाँ विकसित की जाएँ।
- स्थानीय खेती, बीज और भोजन प्रणालियों को पुनर्जीवित किया जाए।
- सामुदायिक संस्थाओं को इस ज्ञान के संरक्षण में सक्रिय भूमिका दी जाएँ।

यह प्रयास केवल ज्ञान बचाने का नहीं, बल्कि स्वराज आधारित समाज निर्माण का है।

निष्कर्ष: ऋतु को समझना, जीवन को समझना

ऋतु का ज्ञान हमें यह सिखाता है कि जीवन का संतुलन प्रकृति के साथ चलने में है, न कि उससे आगे निकलने में। आदिवासी समाज की यह समझ आज के समय में और भी प्रासंगिक हो जाती है। यदि हम इस ज्ञान को अपनाते हैं, तो हम न केवल अपनी जीवनशैली को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित, संतुलित और आत्मनिर्भर भविष्य भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

"ऋतु का ज्ञान केवल मौसम की पहचान नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ जीने की समझ है—और यही सच्चा स्वराज है।"



वनोपजों के अनुमानित भाव : नीमच मंडी में विभिन्न वनोपज के भाव नीचे दिए गए हैं -

दिनांक : 23 मार्च, 2026

फसल	न्यूनतम भाव	अधिकतम भाव	औसतन भाव	फसल	न्यूनतम भाव	अधिकतम भाव	औसतन भाव	फसल	न्यूनतम भाव	अधिकतम भाव	औसतन भाव	फसल	न्यूनतम भाव	अधिकतम भाव	औसतन भाव
गेंहूँ	2050	3191	2400	अलसी	6000	7703	7500	अश्वगंधा	11000	27000	21000	महुआ	4200	4200	4200
मक्कापीली	1520	1821	1680	तिल्ली	8300	9900	8920	तुलसी बीज	12900	16550	15500	आंवला	3000	6200	6700
जौ	1700	2152	2000	मैथी	4000	7099	5950	चिया बीज	11100	16700	15300	उडद	3900	7250	5800
लहसुन	3000	11600	6000	धनिया	7000	11700	9000	बहेड़ा	1500	4441	2367	सोयाबीन	4850	5650	5200
चना	4850	5400	5100	अजवाइन	7200	15625	11900	गोंद	3000	3700	3500	रायडा	4200	6650	6400
मुंगफली	5000	7510	6700	प्याज	487	1312	750	इमली	1800	25073	11273	कलौंजी	8500	16700	14000

ध्यान दें : ये भाव अनुमानित हैं और मंडी में फसल की गुणवत्ता और मांग के अनुसार बदल सकते हैं। किसी भी लेन-देन से पहले मंडी में वर्तमान भाव की पुष्टि करना आवश्यक है।



गर्मी की समझ, हमारे जीवनशैली में विज्ञान और अनुभव

दक्षिण राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश, गर्मी के मौसम में तीव्र तापमान, जल संकट और जीवन के कठिन हालात का सामना करते हैं। ऐसे समय में हमारे समुदायों की जीवनशैली हमें एक गहरा संदेश देती है कि प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर कैसे स्वस्थ, संतुलित और सुरक्षित जीवन जिया जा सकता है। यह केवल परम्परा नहीं, बल्कि एक "लोक विज्ञान" है, जो अनुभव, पर्यावरण की समझ और पीढ़ियों की सीख पर आधारित है। आज जब आधुनिक जीवनशैली ने हमें कृत्रिम साधनों पर निर्भर बना दिया है, तब यह सवाल उठता है कि क्या हम आधुनिक बनते-बनते अपनी जड़ों से दूर हो रहे हैं?

हमारे समाज में गर्मी को केवल एक मौसम नहीं, बल्कि एक "जीवन चक्र" के रूप में देखा जाता है। उनके दैनिक जीवन में समय का निर्धारण प्रकृति के अनुसार होता है। गर्मी के दिनों में सुबह जल्दी उठना, सूरज निकलने से पहले खेत या जंगल का काम करना, और दोपहर की तेज धूप में विश्राम करना, यह उनकी दिनचर्या का हिस्सा है। यह व्यवस्था केवल परंपरा नहीं, बल्कि शरीर के विज्ञान से जुड़ी हुई है। तेज धूप में काम करने से शरीर में पानी की कमी, थकान और लू लगने का खतरा बढ़ता है, जिसे हमारे समाज अपने अनुभव से समझता है और उससे बचने के उपाय भी अपनाता है।

खान-पान के स्तर पर भी हमारे जीवनशैली में गहरा विज्ञान छिपा हुआ है। गर्मी के मौसम में वे ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन



करते हैं जो शरीर को ठंडक प्रदान करें और ऊर्जा बनाए रखें। मट्ठा, छाछ, सत्तू, महुआ से बने पेय, और स्थानीय फल जैसे आम, जामुन, ककड़ी आदि न केवल शरीर को हाइड्रेट रखते हैं बल्कि पोषण भी प्रदान करते हैं। इसके साथ ही वे ताजे, मौसमी और स्थानीय खाद्य पदार्थों पर निर्भर रहते हैं, जिससे शरीर का संतुलन बना रहता है। यह भोजन पद्धति आज के पैकेज्ड और प्रोसेस्ड फूड से कहीं अधिक स्वास्थ्यवर्धक है, लेकिन आधुनिकता की दौड़ में हम धीरे-धीरे इन परम्पराओं को छोड़ते जा रहे हैं।

आवास और रहन-सहन की दृष्टि से भी हमारे समुदायों की समझ अत्यंत वैज्ञानिक है। मिट्टी, लकड़ी और घास से बने घर गर्मी में ठंडक बनाए रखते हैं। घरों की संरचना इस प्रकार होती है कि हवा का संचार बना रहे और सीधी धूप अंदर न आए। आंगन में पेड़-पौधे लगाना, छाया का उपयोग करना और प्राकृतिक वेंटिलेशन पर ध्यान देना, ये सभी उपाय बिना किसी आधुनिक तकनीक के घर को ठंडा रखते हैं। इसके विपरीत, आज के कंक्रीट के घर और बंद कमरे हमें कृत्रिम ठंडक (एसी, कूलर) पर निर्भर बना देते हैं, जिससे ऊर्जा की खपत बढ़ती है और पर्यावरण पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

जल प्रबंधन के क्षेत्र में हमारे समाज का अनुशासन और समझ भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। गर्मी के मौसम में पानी की कमी को



देखते हुए वे जल का उपयोग बहुत सोच-समझकर करते हैं। कुएं, बावड़ी और तालाब जैसे पारंपरिक जल स्रोतों की साफ-सफाई और संरक्षण सामूहिक जिम्मेदारी होती है। पानी का उपयोग केवल आवश्यक कार्यों के लिए किया जाता है और बर्बादी से बचा जाता है। यह सामुदायिक अनुशासन आज के समय में बहुत जरूरी है, जब जल संकट एक गंभीर समस्या बनता जा रहा है।

गर्मी के दौरान स्वास्थ्य और देखभाल के लिए भी हमारे समाज के पास अनेक पारंपरिक उपाय हैं। वे शरीर को ठंडा रखने के लिए नीम, तुलसी और अन्य औषधीय पौधों का उपयोग करते हैं। लू लगने पर घरेलू उपाय, जैसे आम का पना, प्याज का उपयोग और ठंडे पानी से शरीर को संतुलित करना, ये सभी उपाय अनुभवजन्य ज्ञान का हिस्सा हैं। यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से स्थानांतरित होता है और समुदाय के हर सदस्य के लिए उपयोगी होता है।

महिलाओं की भूमिका इस पूरे ज्ञान तंत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न केवल परिवार के लिए भोजन और पोषण का प्रबंध करती हैं, बल्कि परम्परागत ज्ञान की संरक्षक भी होती हैं। वे बच्चों को सही खान-पान, दिनचर्या और स्वास्थ्य के बारे में सिखाती हैं, जिससे यह ज्ञान अगली पीढ़ी तक पहुंचता है। हमारे समाज में महिलाएं वास्तव में "जीवित पुस्तक" की तरह होती हैं, जिनके पास जीवन के हर पहलू से जुड़ा ज्ञान होता है। लेकिन आज के समय में यह परम्परागत ज्ञान धीरे-धीरे कमजोर होता जा रहा है। आधुनिकता, शहरीकरण और बाजार आधारित जीवनशैली ने लोगों को प्रकृति से दूर कर दिया है। लोग अब देर रात तक जागते हैं, अनियमित भोजन करते हैं, और कृत्रिम साधनों पर निर्भर होते जा रहे हैं। इससे न केवल स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, बल्कि पर्यावरण और

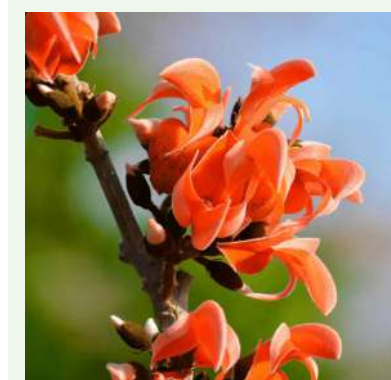
सामाजिक संरचना पर भी असर पड़ता है। यह स्थिति हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम आधुनिक होकर अपनी सबसे बड़ी ताकत-प्रकृति के साथ संतुलन-को खो रहे हैं?

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम हमारे समाज के इस "लोक विज्ञान" को समझें, उसका सम्मान करें और उसे अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करें। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम आधुनिकता को पूरी तरह छोड़ दें, बल्कि यह है कि हम परम्परागत ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के बीच संतुलन बनाएं। यदि हम अपने खान-पान, दिनचर्या और जीवनशैली में छोटे-छोटे बदलाव करें - जैसे मौसमी भोजन अपनाना, दिनचर्या को प्रकृति के अनुसार ढालना, और जल तथा ऊर्जा का संरक्षण करना-तो हम न केवल अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि पर्यावरण की रक्षा भी कर सकते हैं।

अंततः, हमारी जीवनशैली हमें यह सिखाती है कि सच्चा विकास वही है जो प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर किया जाए। गर्मी के इस कठिन मौसम में उनका अनुभव और ज्ञान हमें यह समझने का अवसर देता है कि कैसे सीमित संसाधनों में भी संतुलित और सुखद जीवन जिया जा सकता है। यह केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक मार्गदर्शन है। अगर हम इस ज्ञान को समझें और अपनाएं, तो हम एक स्वस्थ, सुरक्षित और आत्मनिर्भर समाज की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।



पलाश : आदिवासी ज्ञान, जैव विविधता और "सच्चे जंगल" की पहचान



प्रस्तावना : प्रकृति का जीवंत संकेत
वसंत के आगमन के साथ भारतीय शुष्क और अर्ध-शुष्क जंगलों में एक अद्भुत परिवर्तन दिखाई देता है - पेड़ों की शाखाएँ नारंगी-लाल फूलों से भर उठती हैं। यह पलाश (Butea Monosperma) का खिलना है, जिसे "Flame of the Forest" कहा जाता है।

लेकिन यह दृश्य केवल सौंदर्य का नहीं, बल्कि प्रकृति में जीवन के पुनर्जागरण का संकेत है। आदिवासी समुदायों के लिए पलाश का खिलना यह बताता है कि मौसम बदल रहा है, परागण करने वाले जीव सक्रिय हो रहे हैं और जंगल में जीवन का नया चक्र शुरू हो चुका है। यह समझ किसी औपचारिक शिक्षा से नहीं, बल्कि पीढ़ियों से संचित अनुभव और प्रकृति के साथ गहरे संबंध से विकसित हुई है।

जैव विविधता का आधार

पलाश के फूल मधुरस से भरपूर होते हैं, जो वसंत ऋतु में अनेक जीवों को आकर्षित करते हैं। इस वृक्ष पर पक्षियों, कीटों और अन्य परागणकर्ताओं की गतिविधि बढ़ जाती है, जिससे यह जंगल के खाद्य जाल का महत्वपूर्ण केंद्र बन जाता है।

- तोते, मैना, बुलबुल और सनबर्ड जैसे पक्षी इसके फूलों से मधुरस ग्रहण करते हैं।
- मधुमक्खियाँ व तितलियाँ परागण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- फूलों पर आने वाले कीट पक्षियों के लिए भोजन बनते हैं।

इस प्रकार पलाश केवल सीधे भोजन नहीं देता, बल्कि पूरे पारिस्थितिक तंत्र को सक्रिय करता है। सूखे वसंत के समय, जब अन्य पेड़ों पर संसाधन सीमित होते हैं, तब पलाश कई जीवों के लिए जीवन का सहारा बन जाता है।

पारिस्थितिकी में भूमिका

"की-स्टोन" वृक्ष पलाश को एक "keystone seasonal species" के रूप में समझा जा सकता है, ऐसा वृक्ष जिसकी उपस्थिति पूरे पारिस्थितिक संतुलन को प्रभावित करती है।

परागण का केंद्र

इसके फूल परागणकर्ताओं को आकर्षित करते हैं, जिससे आसपास की वनस्पति के प्रजनन में सहायता मिलती है।

खाद्य श्रृंखला का विस्तार

- (1) फूल (2) कीट (3) पक्षी (4) बीज फैलाव

इस प्रक्रिया से जंगल में जीवन का निरंतर प्रवाह बना रहता है।

आश्रय और संरचना

पलाश की शाखाएँ पक्षियों को घोंसले बनाने और विश्राम के लिए सुरक्षित स्थान प्रदान करती हैं।

आदिवासी पारिस्थितिक ज्ञान में पलाश

आदिवासी समाज प्रकृति को एक जीवित और परस्पर जुड़े हुए तंत्र के रूप में समझता है। इस दृष्टिकोण में पलाश एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

स्थानीय ज्ञान के अनुसार

- पलाश का खिलना शहद संग्रह के मौसम की शुरुआत का संकेत देता है।
- यह खेती और बीज तैयारी के समय को समझने में मदद करता है।
- पक्षियों और अन्य जीवों की गतिविधियों में परिवर्तन इसी समय स्पष्ट होता है।

इस प्रकार पलाश एक प्राकृतिक कैलेंडर की तरह कार्य करता है, जो बिना किसी आधुनिक उपकरण के भी समय और परिवर्तन को दर्शाता है।

जल-जंगल-जमीन का संतुलन

- पलाश केवल जैव विविधता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मिट्टी, जल और वनस्पति के बीच संतुलन बनाए रखने में भी योगदान देता है।
- इसकी जड़ें मिट्टी को कटाव से बचाती हैं।
- गिरी हुई पत्तियाँ मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती हैं।

● यह स्थानीय जल चक्र और नमी बनाए रखने में सहायक होता है। इस प्रकार पलाश एक ऐसा वृक्ष है जो जंगल के भीतर छिपे हुए पारिस्थितिक संबंधों को मजबूत करता है।

खेती और जंगल के बीच सेतु

पलाश जैसे देशी वृक्ष केवल जंगल तक सीमित नहीं रहते, बल्कि आसपास के कृषि तंत्र को भी प्रभावित करते हैं।

- परागण करने वाले जीव खेतों तक पहुँचते हैं, जिससे उत्पादन बढ़ता है।
- जैव विविधता बढ़ने से प्राकृतिक कीट नियंत्रण संभव होता है।
- पर्यावरणीय संतुलन खेती को अधिक स्थिर और लचीला बनाता है।

इस प्रकार पलाश खेती और जंगल के बीच एक प्राकृतिक सेतु का कार्य करता है।

आजीविका और सांस्कृतिक महत्व-पलाश आदिवासी समुदायों के जीवन में गहराई से जुड़ा हुआ है।

आजीविका

- पत्तियों से पतल और दोने बनाया
- गोंद और फूलों का संग्रह
- स्थानीय बाजारों में बिक्री

संस्कृति

- त्योहारों में फूलों का उपयोग
- प्राकृतिक रंगों की परंपरा
- पारंपरिक उपचार पद्धतियाँ

यह वृक्ष केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन शैली और सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा है।

संरक्षण : अस्तित्व का प्रश्न आज देशी वृक्षों की संख्या कई क्षेत्रों में घट रही है, जिसके प्रमुख कारण हैं :-

- वनों की कटाई
- बाहरी प्रजातियों का विस्तार
- भूमि उपयोग में बदलाव

यदि पलाश जैसे वृक्ष समाप्त होते हैं, तो इसका प्रभाव केवल पेड़ों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि :-

- जैव विविधता घटेगी
- पारंपरिक आजीविका प्रभावित होगी
- पारिस्थितिक संतुलन कमजोर होगा

इसलिए इनका संरक्षण पर्यावरण के साथ-साथ समुदायों के भविष्य से भी जुड़ा हुआ है।

निष्कर्ष : एक वृक्ष, अनेक जीवन पलाश हमें यह सिखाता है कि प्रकृति में हर तत्व का अपना महत्व है और हर जीवन एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। जब वसंत में पलाश खिलता है, तो वह केवल जंगल को रंगों से नहीं भरता-वह यह संकेत देता है कि प्रकृति संतुलन में है और जीवन का प्रवाह जारी है। एक पलाश का पेड़ केवल एक वृक्ष नहीं, बल्कि जैव विविधता, पारंपरिक ज्ञान और सामुदायिक जीवन का आधार है।

"पलाश को बचाना, केवल एक पेड़ को बचाना नहीं - बल्कि प्रकृति, परंपरा और भविष्य के बीच संतुलन को सुरक्षित रखना है।"



परीक्षा के बाद बच्चों की छुट्टियाँ जीवन से जुड़ी सीख और संभावनाएँ

सुबह का समय है। गांव की गलियों में अब स्कूल जाने की जल्दी नहीं है। परीक्षा समाप्त हो चुकी है और बच्चों के जीवन में छुट्टियों का समय शुरू हो गया है। आदिवासी क्षेत्रों में यह समय बच्चों के लिए केवल आराम का नहीं, बल्कि जीवन को करीब से समझने और अनुभव करने का अवसर होता है। कोई बच्चा खेत की ओर जा रहा है, कोई मवेशियों के साथ जंगल की तरफ, तो कोई अपने दोस्तों के साथ खेल में व्यस्त है। यह छुट्टियाँ बच्चों के लिए एक ऐसी पाठशाला बन जाती हैं, जहाँ कितानों की जगह अनुभव सिखाते हैं और जीवन खुद शिक्षक बन जाता है।

छुट्टियों में बच्चों का जीवन : अनुभवों की सीख
अनुभवों की सीख परीक्षा के बाद बच्चों की दिनचर्या बदल जाती है। वे अपने परिवार के साथ अधिक समय बिताते हैं और रोजमर्रा के कार्यों में हाथ बंटाते हैं। कई बच्चे खेतों में जाकर खेती के काम सीखते हैं। वे देखते हैं कि किस तरह मौसम के अनुसार काम किया जाता है, बीज बोए जाते हैं और फसल की देखभाल की जाती है। यह अनुभव उन्हें मेहनत और धैर्य का महत्व सिखाता है। कुछ बच्चे मवेशियों को चराने के लिए जंगल की ओर जाते हैं। इस दौरान वे प्राकृतिक वातावरण को समझते हैं, पेड़-पौधों की पहचान करते हैं और अपने आसपास



के संसाधनों से जुड़ते हैं।

छुट्टियाँ बच्चों के लिए खेल और आनंद का भी समय होती हैं। वे अपने दोस्तों के साथ पारंपरिक खेल खेलते हैं, हँसी-खुशी के साथ समय बिताते हैं और बिना किसी दबाव के जीते हैं। इसके साथ ही, यह समय बच्चों को अपनी संस्कृति के करीब भी लाता है। वे अपने बुजुर्गों से कहानियाँ, गीत और परंपराएँ सीखते हैं, जिससे उनकी पहचान मजबूत होती है।

हालांकि, कुछ बच्चों के लिए यह समय चुनौतियों भी लेकर आता है। कई बार उन्हें काम में इतना लगना पड़ता है कि वे पढ़ाई से दूर हो जाते हैं। यही वह समय होता है, जहाँ सही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

बाल स्वराज समूह की भूमिका :

क्या हो सकता है एक सकारात्मक प्रयास वर्तमान में कोई जगहों पर छुट्टियों के दौरान बच्चों के लिए कोई विशेष संरचित गतिविधियाँ नहीं होतीं, जिसके कारण बच्चे धीरे-धीरे पढ़ाई से दूर हो सकते हैं। ऐसे में बाल स्वराज समूह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह समूह बच्चों के लिए एक ऐसा मंच बन सकता है, जहाँ छुट्टियों के दौरान भी सीखने और जुड़ाव की प्रक्रिया जारी रहे। यदि यह



समूह सक्रिय रूप से काम करे, तो गांव में बच्चों के लिए नियमित बैठकें आयोजित की जा सकती हैं, जहाँ वे खेल, कहानी, गीत और चर्चा के माध्यम से सीख सकें। बाल स्वराज समूह बच्चों को यह समझाने में भी मदद कर सकता है कि छुट्टियाँ केवल काम करने या समय बिताने के लिए नहीं, बल्कि खुद को बेहतर बनाने का अवसर हैं। सरल गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को पढ़ाई से जोड़े रखना, उनकी रुचि बनाए रखना और उन्हें नई चीजें सीखने के लिए प्रेरित करना इस समूह की एक महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। इसके अलावा, यह समूह बच्चों के बीच संवाद का माध्यम बन सकता है, जहाँ वे अपनी समस्याओं और अनुभवों को साझा कर सकें। इससे बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ेगा और वे एक-दूसरे से सीख पाएंगे। यदि बाल स्वराज समूह इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभाए, तो छुट्टियाँ बच्चों के लिए और अधिक उपयोगी और सीख से भरपूर बन सकती हैं।

परिवार और समुदाय की भूमिका :

सहयोग और संतुलन छुट्टियों के दौरान बच्चों के जीवन में परिवार और समुदाय की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। परिवार बच्चों को जीवन के अनुभव सिखाता है, लेकिन यह जरूरी है कि बच्चों पर जिम्मेदारियों का बोझ इतना न हो कि उनकी पढ़ाई प्रभावित हो। बच्चों के साथ संवाद करना, उन्हें समझना और प्रोत्साहित करना बहुत आवश्यक है।

समुदाय भी इस प्रक्रिया में अहम भूमिका निभा सकता है। गांव में यदि सकारात्मक माहौल बनाया जाए, तो बच्चे बेहतर तरीके से सीख सकते हैं। छुट्टियों के दौरान सामूहिक खेल, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और छोटे-छोटे सीखने के अवसर बच्चों को सक्रिय बनाए रखते हैं।

साथ ही, यह भी जरूरी है कि समुदाय मिलकर यह सुनिश्चित करे कि कोई भी बच्चा बाल मजदूरी या अन्य कारणों से शिक्षा से वंचित न हो।

निष्कर्ष :- आदिवासी बच्चों के लिए परीक्षा के बाद की छुट्टियाँ जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह समय उन्हें प्रकृति, संस्कृति और जिम्मेदारियों से जोड़ता है। यदि इस समय में सही दिशा और सहयोग मिले, तो यह बच्चों के विकास का मजबूत आधार बन सकता है। बाल स्वराज समूह, परिवार और समुदाय मिलकर इस समय को और अधिक सार्थक बना सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम छुट्टियों को केवल खाली समय न समझें, बल्कि इसे बच्चों के सीखने और आगे बढ़ने के अवसर के रूप में देखें-व्योक्ति सही मार्गदर्शन के साथ यही छुट्टियाँ बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की नींव बन सकती हैं।



वन उत्पाद और स्वच्छ ऊर्जा आधारित मूल्य श्रृंखला

आदिवासी समृद्धि की दिशा में एक समग्र दृष्टिकोण

भारत के आदिवासी समुदायों का जीवन लंबे समय से वनों पर निर्भर रहा है। महुआ, इमली, लाख, तेंदूपत्ता और औषधीय पौधों जैसे लघु वनोपज (MFP) न केवल उनकी पारंपरिक जीवनशैली का हिस्सा हैं, बल्कि नकद आय का भी प्रमुख स्रोत हैं। फिर भी, इन संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद आदिवासी अर्थव्यवस्था कम आय और सीमित अवसरों के दायरे में फंसी हुई है। इस स्थिति की जड़ न तो संसाधनों की कमी है और न ही श्रम की - बल्कि ऊर्जा और मूल्य संवर्धन की कमी है।

समस्या : कच्चे उत्पाद, सीमित आय और मूल्य का नुकसान

अधिकांश आदिवासी परिवार अपने वन उत्पादों को बिना किसी प्रसंस्करण के बेच देते हैं। महुआ को सूखे फूलों के रूप में, इमली को कच्चे गूदे के रूप में, व औषधीय पौधों को सीधे बाजार में बेच दिया जाता है। इससे उन्हें कम कीमत मिलती है, जबकि बिचौलियों अधिक मुनाफा कमा लेते हैं।

इसका परिणाम -

- उत्पाद का कम मूल्य।
- बिचौलियों पर निर्भरता।
- 30-70 प्रतिशत तक संभावित आय का नुकसान।

इस स्थिति का एक बड़ा कारण है गांव स्तर पर विश्वसनीय और सस्ती ऊर्जा की अनुपलब्धता। प्रसंस्करण कार्य जैसे सुखाना, छटाई, तेल निकालना, गूदा बनाना या भंडारण - इन सभी के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। दूरदराज के आदिवासी क्षेत्रों में या तो बिजली उपलब्ध नहीं होती या फिर वह इतनी अनियमित होती है कि उसका उपयोग उत्पादक कार्यों के लिए नहीं किया जा सकता है।

प्रमुख आंकड़े

2-3x आय में संभावित वृद्धि	3,000+ वन धन विकास केन्द्र	10 लाख + आदिवासी लाभार्थी	30-70% संभावित आय नुकसान (बिना प्रसंस्करण)
-------------------------------	-------------------------------	------------------------------	---

स्वच्छ ऊर्जा: मूल्य संवर्धन का आधार

विकेन्द्रीकृत नवीकरणीय ऊर्जा (DRE) इस परिदृश्य को बदलने की क्षमता रखती है। यह केवल बिजली उपलब्ध कराने का माध्यम नहीं, बल्कि आजीविका और आय वृद्धि का इंजन बन सकती है। ये तकनीकें स्थानीय स्तर पर स्थापित की जा सकती हैं और ग्रिड पर निर्भर नहीं होतीं।

प्रमुख तकनीकें और उपयोग

तकनीक	उपयोग	प्रभाव
सोलर ड्रायर	महुआ, मिर्च, हल्दी सुखाना	बेहतर गुणवत्ता, अधिक मूल्य
सोलर कोल्ड स्टोरेज	नाशवान उत्पादों का संरक्षण	नुकसान में कमी
सोलर ऑयल एक्सपेलर	साल बीज, नीम, महुआ तेल	स्थानीय प्रसंस्करण
मिनी-ग्रिड	ग्रामीण उद्यम	रोजगार सृजन

आय में वृद्धि की संभावना

यदि इन तकनीकों को छोटे स्तर की प्रसंस्करण इकाइयों के साथ जोड़ा जाए, तो स्थानीय स्तर पर मूल्यसंवर्धन संभव हो जाता है, जिससे आय में 2-3 गुना तक वृद्धि हो सकती है।

महिलाओं की भूमिका : परिवर्तन की धुरी

अधिकांश आदिवासी क्षेत्रों में वन उत्पादों का संग्रहण मुख्य रूप से महिलाएं करती हैं। इसलिए, स्वच्छ ऊर्जा आधारित मूल्य श्रृंखला में महिलाओं की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। महिला स्वयं सहायता समूह (SHGs) सोलर ड्रायर संचालित कर सकते हैं, प्रसंस्करण इकाइयों का प्रबंधन कर सकते हैं और सामूहिक विपणन कर सकते हैं। इससे न केवल उनकी आय बढ़ती है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण भी होता है।

झारखंड, ओडिशा और राजस्थान जैसे राज्यों में किए गए कई प्रयासों ने यह दिखाया है कि जब महिलाओं को इन पहलों के केंद्र में रखा जाता है, तो परिणाम अधिक टिकाऊ और प्रभावी होते हैं।

बाजार से जुड़ाव : सफलता की कुंजी

हालांकि संभावनाएं व्यापक हैं, लेकिन अभी तक स्वच्छ ऊर्जा और वन आधारित आजीविका को एक साथ जोड़ने के प्रयास सीमित हैं। इसलिए, इन पहलों को निम्नलिखित से जोड़ना आवश्यक है-

- TRIFED और वन धन विकास केंद्र
- ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म
- किसान उत्पादक संगठन (FPOs) और सहकारी समितियां

लक्ष्य इससे आदिवासी समुदाय केवल उत्पादक नहीं, बल्कि मूल्य निर्धारक बन सकते हैं।

नीति और वित्त : क्या बदलने की जरूरत है?

हालांकि संभावनाएं व्यापक हैं, लेकिन अभी तक स्वच्छ ऊर्जा और वन आधारित आजीविका को एक साथ जोड़ने के प्रयास सीमित हैं। वर्तमान नीतियां अक्सर ऊर्जा और आजीविका को अलग-अलग क्षेत्रों के रूप में देखती हैं। इस दिशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता है।

चुनौतियां -

- वित्तीय सहायता और क्रेडिट की कमी
- तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव
- विभिन्न मंत्रालयों के बीच समन्वय की कमी

समाधान -

- आजीविका से जुड़े DRE समाधानों के लिए लक्षित वित्तीय सहायता।
- समुदायों के लिए प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण।
- विभिन्न मंत्रालयों के बीच समन्वय (Convergence)।
- सामुदायिक स्वामित्व मॉडल को बढ़ावा।

सरकारी सहायता, CSR और निजी निवेश के संयोजन से इन पहलों को बड़े स्तर पर लागू किया जा सकता है।

जलवायु परिवर्तन और DRE

विकेन्द्रीकृत नवीकरणीय ऊर्जा (DRE) आधारित यह मॉडल न केवल आजीविका को सशक्त बनाता है, बल्कि जलवायु परिवर्तन से निपटने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करके कार्बन उत्सर्जन में कमी लाता है। साथ ही, सोलर आधारित प्रणालियां जैसे सोलर ड्रायर और कोल्ड स्टोरेज समुदायों को जलवायु जोखिमों - जैसे अनियमित वर्षा, तापमान वृद्धि और फसल नुकसान - से बचाने में मदद करती हैं। इसके अतिरिक्त, यह मॉडल स्थानीय संसाधनों के सतत और संतुलित उपयोग को बढ़ावा देता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण और आजीविका सुरक्षा दोनों सुनिश्चित होते हैं।

वन निर्भरता से वन समृद्धि तक

भारत की ऊर्जा परिवर्तन यात्रा को अक्सर बड़े आंकड़ों में देखा जाता है, लेकिन आदिवासी क्षेत्रों में इसका असली प्रभाव आजीविका में सुधार से मापा जाएगा। सही दृष्टिकोण और नीति समर्थन के साथ, आदिवासी समुदाय न केवल इस परिवर्तन का हिस्सा बन सकते हैं, बल्कि इसके नेतृत्वकर्ता भी बन सकते हैं।

इससे संभव होगा -

- आय में वृद्धि
- स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती
- महिलाओं का सशक्तिकरण
- जलवायु अनुकूल विकास

यह केवल एक विकास मॉडल नहीं, बल्कि एक समावेशी व न्यायसंगत भविष्य की दिशा है-जहां आदिवासी समुदाय केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि इस परिवर्तन के अग्रदूत बनते हैं।

आजीविका और आत्मनिर्भरता की ओर एक सशक्त कदम



मध्यप्रदेश के रतलाम जिले के बाजना ब्लॉक का बगली गांव एक आदिवासी बहुल क्षेत्र है, जहाँ जीवन आज भी सीमित संसाधनों और प्रकृति पर निर्भर है। अधिकांश परिवार सीमांत खेती, पशुपालन और मौसमी मजदूरी पर निर्भर हैं। सिंचाई की कमी, छोटी जोत और स्थायी आय के अभाव ने यहाँ मौसमी पलायन को जीवन का हिस्सा बना दिया था- जहाँ परिवारों को साल में दो बार घर छोड़ना पड़ता था। इसी गांव की रहने वाली गुड्डिबाई मुनिया

की कहानी इस संघर्ष से बदलाव तक की एक प्रेरक यात्रा है। उनके परिवार में पति, एक बेटा और चार बेटियाँ हैं। संसाधनों के रूप में उनके पास 3 बीघा खेती योग्य भूमि, 2 बैल, 1 गाय और कुछ बकरियाँ हैं, लेकिन इसके बावजूद स्थिर आजीविका का अभाव बना रहता था। हर साल सितंबर-अक्टूबर और मार्च-अप्रैल में गुड्डिबाई और उनके पति को गुजरात और मालवा क्षेत्र में मजदूरी के लिए पलायन करना पड़ता था। गुड्डिबाई बताती हैं - "पलायन के समय बच्चों की पढ़ाई और घर की धिंता हमेशा बनी रहती थी। लेकिन पेट भरने के लिए जाना मजबूरी थी।"

बदलाव की शुरुआत : सीख से आत्मविश्वास तक

वर्ष 2023 में क्षेत्र में शुरू हुए प्रयासों के दौरान, गांव-स्तर पर परिवारों से संवाद स्थापित किया गया इसी क्रम में गुड्डिबाई "सक्षम महिला समूह" से जुड़ीं और नियमित बैठकों में भाग लेने लगीं। इन बैठकों ने उनके लिए एक नया दृष्टिकोण खोला-जहाँ उन्होंने आजीविका, पोषण, बचत और जैविक खेती के बारे में सीखा। एक कार्यकर्ता के अनुसार : "गुड्डिबाई में सीखने की ललक व

कुछ नया करने का साहस शुरू से दिखता था।"

संघर्ष से समाधान तक : पोषण वाड़ी की यात्रा गुड्डिबाई ने अपने घर के पास पोषणवाड़ी (किचन गार्डन) शुरू करने का निर्णय लिया। लेकिन

शुरुआत में उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा-

- बीजों का सही से अंकुरित न होना।
- सिंचाई की समस्या।
- अपेक्षा से कम उत्पादन।

एक समय ऐसा भी आया जब उनका मनोबल टूटने लगा। गुड्डिबाई बताती हैं - "पहली बार लगा कि शायद मुझसे नहीं हो पाएगा... लेकिन समूह की दीदियों ने हिम्मत दी और मार्गदर्शन मिला, तो मैंने दोबारा कोशिश की।" दूसरे प्रयास में उन्होंने आधा बीघा भूमि पर कई प्रकार की अलग-अलग सब्जियाँ उगाईं - भिंडी, लौकी, गिलकी, पालक, मैथी, धनिया, मिर्च, चवला और कंडु आदि।

परिणाम : पोषण, आय और आत्मसम्मान

- धीरे-धीरे पोषण वाड़ी ने सकारात्मक परिणाम देना शुरू किया -
- परिवार को ताजी और जैविक सब्जियाँ मिलने लगी।
- बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार हुआ बीमारी पर खर्च कम हुआ।
- अतिरिक्त सब्जियाँ बेचकर 500रु.-1000रु. प्रति सप्ताह आय होने लगी।
- यानी लगभग 2,000रु.-4,000रु. प्रति माह।
- सालाना करीब 24,000रु.-48,000रु. अतिरिक्त आय सबसे महत्वपूर्ण बदलाव यह रहा कि मौसमी पलायन पूरी तरह बंद हो गया।

गुड्डिबाई गर्व से कहती हैं - "अब घर छोड़कर बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ती- यही सबसे बड़ी राहत है।"

प्रेरणा से परिवर्तन की लहर

आज गुड्डिबाई की पहल पूरे गांव के लिए एक प्रेरणा बन चुकी है। उनकी सफलता से -

- अन्य महिलाएँ भी पोषणवाड़ी शुरू कर रही हैं
- महिलाएँ समूहों से जुड़ रही हैं
- स्थानीय स्तर पर आजीविका के नए अवसर विकसित हो रहे हैं

निष्कर्ष - यह कहानी केवल एक महिला की सफलता नहीं, बल्कि एक बड़े बदलाव का संकेत है-जहाँ ज्ञान, सामूहिकता और स्थानीय संसाधनों का सही उपयोग आत्मनिर्भरता का मार्ग बनाता है।

● जहाँ पहले मजबूरी थी, आज वहाँ विकल्प हैं।
● जहाँ पलायन था, आज सम्मानजनक आजीविका हैं।
● और जहाँ अनिश्चितता थी, आज आत्मविश्वास हैं।
यह अतिरिक्त आय केवल कमाई नहीं, बल्कि परिवार के लिए स्थिरता, पोषण और सम्मानजनक जीवन की मजबूत नींव बनी है।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज क्रियान्वयन इकाई - हिरण

वाते पत्रिका के सभी साथियों को जय गुरु !!
हिरण इकाई का जल, खेती और सामुदायिक प्रयास की दिशा में एक कदम

साथियों, हमने होली का पर्व हर्षोल्लास से मनाया और वर्तमान में रबी फसल की कटाई का कार्य जारी है। कहीं गहाई चल रही है तो कहीं खेतों को पुनः तैयार कर जायद फसल की तैयारी की जा रही है। इस वर्ष रबी फसल का दायरा तो बढ़ा है, लेकिन प्रति बीघा उत्पादन अपेक्षा से कुछ कम रहा है। इसके पीछे मौसम में बदलाव और असमय बारिश को मुख्य कारण माना जा रहा है।

मौसम और पानी की उपलब्धता को देखते हुए इस बार जायद फसल का क्षेत्र बढ़ने की संभावना है। हमारा मानना है कि पानी की हर बूंद का सदुपयोग होना चाहिए। इसलिए जहाँ भी थोड़ी-बहुत पानी की उपलब्धता हो-जैसे हैंडपंप, कुएं या बर्तन धोने की जगह-वहाँ सब्जियों के पौधे अवश्य लगाने चाहिए।

यदि हम सभी इस सोच को अपनाएं, तो पानी का बेहतर उपयोग संभव होगा।

गर्मी की शुरुआत के साथ ही छोटा सरवा, कुशलगढ़, सज्जनगढ़ और आनंदपुरी क्षेत्रों में पेयजल संकट को देखते हुए टैंकरों के लिए आवेदन किए जा रहे हैं। ऐसे में जरूरी है कि हम पानी के उपयोग के साथ-साथ उसके रिचार्ज पर भी ध्यान दें, ताकि हमारे जल स्रोत जीवित रह सकें। यह एक सच्चाई है कि विकास का आधार पानी ही है, इसलिए हमें जल के प्रति सजग और संवेदनशील होना होगा।

हिरण इकाई में कुशलगढ़ और सज्जनगढ़ ब्लॉक के सभी 276 गांवों में ग्राम स्वराज समूह की बैठकें आयोजित की गईं। इनमें वर्ष की उपलब्धियों की समीक्षा और आगामी वर्ष की कार्ययोजना पर चर्चा की गई। साथ ही जिम्मेदार साथियों से प्रगति की जानकारी लेकर आगामी वर्ष में और अधिक सक्रियता से कार्य करने पर जोर दिया गया।

हिरण इकाई में कुशलगढ़ और सज्जनगढ़ ब्लॉक के सभी 276 गांवों में ग्राम स्वराज समूह की बैठकें आयोजित की गईं। इनमें वर्ष की उपलब्धियों की समीक्षा और आगामी वर्ष की कार्ययोजना पर चर्चा की गई। साथ ही जिम्मेदार साथियों से प्रगति की जानकारी लेकर आगामी वर्ष में और अधिक सक्रियता से कार्य करने पर जोर दिया गया।

हिरण इकाई में कुशलगढ़ और सज्जनगढ़ ब्लॉक के सभी 276 गांवों में ग्राम स्वराज समूह की बैठकें आयोजित की गईं। इनमें वर्ष की उपलब्धियों की समीक्षा और आगामी वर्ष की कार्ययोजना पर चर्चा की गई। साथ ही जिम्मेदार साथियों से प्रगति की जानकारी लेकर आगामी वर्ष में और अधिक सक्रियता से कार्य करने पर जोर दिया गया।

सक्षम समूह की बैठकों में 1 मीटर गुणा 1 मीटर क्षेत्रफल के माध्यम से उत्पादन आकलन, बीज संरक्षण, जायद फसल की तैयारी और बीजामृत बनाने का प्रदर्शन किया गया। बाल स्वराज समूह में बच्चों को वार्षिक परीक्षा की तैयारी एवं खेल-खेल में सीखने की गतिविधियां करवाई गईं, साथ ही गर्मी में दोपहर के समय बाहर न निकलने की सलाह दी गई।



सभी 276 गांवों में फार्मर फील्ड स्कूल का आयोजन किया गया, जहाँ किसान प्रदर्शन के माध्यम से सीखकर उसे अपने खेतों में अपनाने और अन्य किसानों तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन की 7 बैठकों में पेयजल स्रोतों का सर्वे कर उनकी वारंवारिक स्थिति जानने और समाधान पर चर्चा करने का निर्णय लिया गया। पशुपालन विभाग द्वारा खुरपका-मुंहपका टीकाकरण अभियान में ग्राम स्वराज समूह के सदस्यों ने 46 गांवों में सभी पशुओं को एकत्र कर सहयोग किया, जिससे कोई भी पशु टीकाकरण से वंचित न रहे।

मनरेगा के अंतर्गत फॉर्म संख्या 6 भरवाकर 1088 परिवारों को रोजगार उपलब्ध कराया गया। साथ ही पुराने जल स्रोतों की सफाई और पुनर्जीवन के कार्यों को आगे बढ़ाने पर विशेष जोर दिया जाएगा। किसानों के उत्पाद स्थानीय स्तर पर बीके और उचित मूल्य मिले इसके लिए हाट बाजार एवं सब्जी बाजार शुरू किये गए।

22 मार्च 2026 को सभी 276 गांवों में विश्व जल दिवस मनाया गया, सभी ग्राम स्वराज, सक्षम समूह एवं बाल स्वराज के सदस्यों ने जिम्मेदारी लेकर इसे मनाया, हलमा किया, पानी के प्रति लोगों को जागरूक किया और पानी के लिए संवेदनशील बनाने हेतु गांव में रेली निकली। इसके जल स्रोतों का सामुदायिक प्रबंध कैसे हो सके उस पर संवाद किया और उसकी रक्षा हेतु प्रण लिया।

वित्तीय वर्ष 2025-26 के कार्यों की समीक्षा करते हुए आगामी वर्ष 2026-27 के लिए नई दिशा तय की गई है। इस वर्ष जायद में मूंग और सब्जी उत्पादन को मुख्य लक्ष्य बनाते हुए क्षेत्रफल बढ़ाने की योजना बनाई गई है, जिस पर समूह, संगठन और वाग्धारा टीम मिलकर कार्य करेंगे।



नर्सरी से बदली तस्वीर...पूजालालजी की पहल रंग लायी

खेड़ी गांव के पूजालालजी अपनी पत्नी झाली और चार बेटियों के साथ एक कच्चे घर में रहते हैं। उनके पास केवल 3 बीघा जमीन है, जिस पर वे सामान्य खेती करते थे। साथ ही मजदूरी कर किसी तरह अपनी आजीविका चलाते थे। लेकिन पारंपरिक खेती से इतनी आय नहीं हो पाती थी कि परिवार का खर्च और घर की जरूरतें पूरी हो सकें। मजदूरी का काम भी नियमित नहीं मिलता था। इसी कारण उन्हें कई बार मजदूरी में गांव छोड़कर बाहर पलायन करना पड़ता था, जिससे पारिवारिक व सामाजिक जीवन भी प्रभावित होता था।



पूरी लगन से पौधों की देखभाल की। उन्होंने देसी तरीकों से मिट्टी की नरमी और पौधों की सेहत का ध्यान रखा। धीरे-धीरे नर्सरी हरी-भरी होने लगी और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ गया।

कुछ महीनों बाद जब पौधे तैयार हो गए, तो वे अपने गांव खेड़ी से 10 किलोमीटर दूर शिवगढ़ के हाट बाजार में पौधे बेचने पहुंचे। काजू के पौधे 150 से 200 रुपये, नींबू 70 रुपये, पीपता 50 रुपये, कटहल 100 रुपये और अमरुद 80 रुपये में बिके। नियमित रूप से हाट में जाकर पौधे बेचते हुए उन्होंने 30 से 35 हजार रुपये तक की आय अर्जित की। यह उनके लिए नई

वाग्धारा संस्था की ग्राम स्वराज समूह की बैठक में पलायन के विषय पर चर्चा हुई। उन्होंने बताया कि पलायन करने के क्या कारण हैं और इसे कैसे रोका जा सकता है, इस दौरान संवाद में यह निकल कर आया कि सामान्यतः खेती करने से जाने वाली खेती करने से एवं आमदनी के अन्य विकल्प नहीं होने से पलायन करना पड़ता है, इसलिए हम सभी को काम के लिए बाहर जाने के बजाय

उम्मीद की शुरुआत थी। सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि इस बार उन्हें मजदूरी के लिए बाहर पलायन नहीं करना पड़ा। वे गांव में रहकर ही सम्मान पूर्वक आजीविका कमा रहे हैं।

आज पूजालाल जी की सफलता ने पूरे गांव में सकारात्मक संदेश फैलाया है। कई ग्रामीण उनकी नर्सरी देखकर प्रेरित हुए हैं और देशी खाद, देशी बीज तथा कम लागत वाली नर्सरी की दिशा में आगे बढ़ने का विचार कर रहे हैं। पूजालाल जी अब गांव में एक उदाहरण बन चुके हैं कि सही मार्गदर्शन, मेहनत और आत्मविश्वास से गांव में ही टिकाऊ आजीविका तैयार की जा सकती है, बिना पलायन किए और परिवार से दूर हुए।

गांव में ही आय बढ़ाने के उपाय खोजने हैं। सामान्य खेती के अलावा सब्जी वाड़ी, फलदार पौधों की वाड़ी, पशुपालन और पौधों की नर्सरी जैसे विकल्पों पर विचार किया गया। इस चर्चा से प्रेरित होकर पूजालाल जी ने नर्सरी के बारे में जानकारी ली और इसे अपने यहां शुरू करने की इच्छा जताई। हालांकि मन में डर भी था कि यदि नर्सरी सफल नहीं हुई तो नुकसान हो सकता है।

उसमें गोबर खाद मिलानी थी, छोटे-छोटे बेड तैयार करने थे और नियमित रूप से पानी देना था। कुछ दिनों बाद जब कुछ पौधे सूख गए तो वे निराश हो गए। लेकिन संस्था के साथियों ने समस्या का कारण समझाया और समाधान बताया। पूजालाल जी ने हिम्मत नहीं हारी और

उत्पादन करने लगे। इससे उनके खेत की उत्पादकता बढ़ी और उन्हें थोड़ी अतिरिक्त आय भी मिलने लगी। हालांकि, खेती से मिलने वाली आय अभी भी उनके परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं थी। ऐसे में उन्होंने अपनी आजीविका के साधनों को विविध बनाने का निर्णय लिया। इसी दिशा में उन्होंने पशुपालन की शुरुआत की। उन्होंने भैंस और बकरी पालन को अपनाया, जो उनके लिए एक पुराना अनुभव था पर इसको पुनः जीवित किया गया।

वाग्धारा संस्था के टीम साथियों ने उन्हें नर्सरी तैयार करने की पूरी जानकारी दी और हर कदम पर सहयोग का भरोसा दिलाया। संस्था की ओर से काजू, कटहल, नींबू, पीपता, अमरुद, गिलोय और चंदन के बीज उपलब्ध कराए गए।

शुरुआत उनके लिए चुनौतीपूर्ण रही। उन्हें खेत की मिट्टी इकट्ठी करनी थी, उसमें गोबर खाद मिलानी थी, छोटे-छोटे बेड तैयार करने थे और नियमित रूप से पानी देना था। कुछ दिनों बाद जब कुछ पौधे सूख गए तो वे निराश हो गए। लेकिन संस्था के साथियों ने समस्या का कारण समझाया और समाधान बताया। पूजालाल जी ने हिम्मत नहीं हारी और

उत्पादन करने लगे। इससे उनके खेत की उत्पादकता बढ़ी और उन्हें थोड़ी अतिरिक्त आय भी मिलने लगी। हालांकि, खेती से मिलने वाली आय अभी भी उनके परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं थी। ऐसे में उन्होंने अपनी आजीविका के साधनों को विविध बनाने का निर्णय लिया। इसी दिशा में उन्होंने पशुपालन की शुरुआत की। उन्होंने भैंस और बकरी पालन को अपनाया, जो उनके लिए एक पुराना अनुभव था पर इसको पुनः जीवित किया गया।



प्रवीण कुमार की आटा चक्की से बदली किस्मत : गांव झेर मोटी की सफलता की कहानी

पूर्व की स्थिति एवं परिवार
ग्राम झेर मोटी के निवासी प्रवीण कुमार (सुरसेग) पहले पूरी तरह परंपरागत खेती पर निर्भर थे। सीमित सिंचाई साधनों के कारण उनकी खेती वर्षा पर आधारित थी, जिससे आमदनी अनिश्चित और अस्थिर रहती थी। गांव में आटा पिसाई की सुविधा उपलब्ध नहीं थी, जिसके कारण लोगों को 4-5 किलोमीटर दूर जाना पड़ता था।

प्रवीण कुमार का परिवार एक साधारण और परिश्रमी परिवार है। परिवार में उनकी पत्नी गुड्डी गरासिया तथा चार बच्चे-बाली राज (कक्षा 6), मोहिनी (कक्षा 5), राज मोहिनी (कक्षा 3) और आजाद (4 वर्ष) शामिल हैं। सीमित आय के कारण परिवार का भरण-पोषण और बच्चों की शिक्षा एक बड़ी चुनौती थी।

सौर ऊर्जा से सिंचाई एवं अतिरिक्त आय
इसके अतिरिक्त, प्रवीण कुमार ने अपने खेत में सोलर पंप स्थापित किया। इससे वे न केवल अपने खेत की सिंचाई करने लगे, बल्कि अन्य किसानों को भी पानी उपलब्ध कराने लगे। इस पहल से उन्हें अतिरिक्त आय प्राप्त होने लगी और आसपास के किसानों को समय पर सिंचाई सुविधा मिलने से उनकी फसल उत्पादन में भी सुधार हुआ।

संगठन से जुड़ाव एवं पहल
प्रवीण कुमार वाग्धारा संस्था से जुड़कर ग्राम स्वराज समूह के सक्रिय सदस्य बने। नियमित बैठकों में भाग लेने से उन्हें सौर ऊर्जा, आजीविका के नए अवसरों और सरकारी योजनाओं की महत्वपूर्ण जानकारी मिली। संस्था के मार्गदर्शन और सहयोग से उन्होंने सौर ऊर्जा को अपनाते हुए नए कार्यों की शुरुआत की।

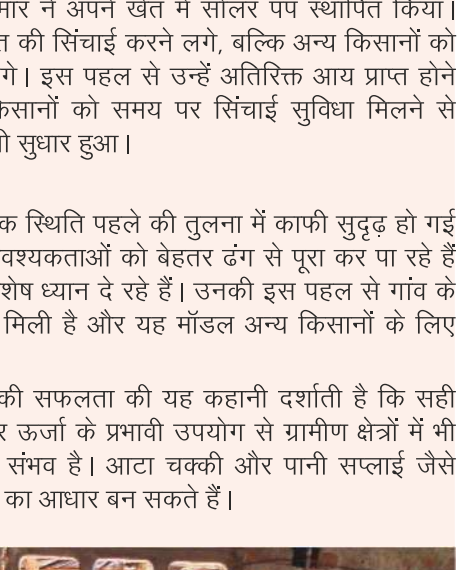
परिणाम एवं प्रभाव
अब प्रवीण कुमार की आर्थिक स्थिति पहले की तुलना में काफी सुदृढ़ हो गई है। वे अपने परिवार की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा कर पा रहे हैं और बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। उनकी इस पहल से गांव के अन्य लोगों को भी सुविधा मिली है और यह मॉडल अन्य किसानों के लिए प्रेरणा बन रहा है।

निष्कर्ष :- प्रवीण कुमार की सफलता की यह कहानी दर्शाती है कि सही मार्गदर्शन, मेहनत और सौर ऊर्जा के प्रभावी उपयोग से ग्रामीण क्षेत्रों में भी आत्मनिर्भरता और विकास संभव है। आटा चक्की और पानी सप्लाई जैसे छोटे प्रयास भी बड़े बदलाव का आधार बन सकते हैं।

सौर ऊर्जा से संचालित आटा चक्की - आय में बड़ा बदलाव
प्रवीण कुमार ने सौर ऊर्जा आधारित कन्वर्टर सिस्टम लगाकर आटा चक्की शुरू की, जो पूरी तरह सौर ऊर्जा से संचालित होती है। इससे बिजली या डीजल पर होने वाला खर्च समाप्त हो गया। इस आटा चक्की से उन्हें प्रतिदिन लगभग 500 रु. से 700 रु. तक की नियमित आय होने लगी, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

इस पहल से हुए प्रमुख लाभ
● गांव में ही आटा पिसाई की सुविधा उपलब्ध हुई।
● 4-5 किलोमीटर दूर जाने की आवश्यकता समाप्त हुई।
● समय और परिवहन खर्च की बचत हुई।
● सौर ऊर्जा के कारण संचालन लागत लगभग शून्य रही।
● नियमित ग्राहकों से स्थायी आय का स्रोत बना।

अंततः, रावजी भाई डिंडोर की यह कहानी ग्रामीण भारत में आत्मनिर्भरता की एक जीवंत मिसाल है, जो यह संदेश देती है कि सही दिशा और दृढ़ संकल्प से सफलता अवश्य प्राप्त की जा सकती है।



सौर ऊर्जा से संचालित आटा चक्की - आय में बड़ा बदलाव
प्रवीण कुमार ने सौर ऊर्जा आधारित कन्वर्टर सिस्टम लगाकर आटा चक्की शुरू की, जो पूरी तरह सौर ऊर्जा से संचालित होती है। इससे बिजली या डीजल पर होने वाला खर्च समाप्त हो गया। इस आटा चक्की से उन्हें प्रतिदिन लगभग 500 रु. से 700 रु. तक की नियमित आय होने लगी, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

इस पहल से हुए प्रमुख लाभ
● गांव में ही आटा पिसाई की सुविधा उपलब्ध हुई।
● 4-5 किलोमीटर दूर जाने की आवश्यकता समाप्त हुई।
● समय और परिवहन खर्च की बचत हुई।
● सौर ऊर्जा के कारण संचालन लागत लगभग शून्य रही।
● नियमित ग्राहकों से स्थायी आय का स्रोत बना।

अंततः, रावजी भाई डिंडोर की यह कहानी ग्रामीण भारत में आत्मनिर्भरता की एक जीवंत मिसाल है, जो यह संदेश देती है कि सही दिशा और दृढ़ संकल्प से सफलता अवश्य प्राप्त की जा सकती है।

सौर ऊर्जा से संचालित आटा चक्की - आय में बड़ा बदलाव
प्रवीण कुमार ने सौर ऊर्जा आधारित कन्वर्टर सिस्टम लगाकर आटा चक्की शुरू की, जो पूरी तरह सौर ऊर्जा से संचालित होती है। इससे बिजली या डीजल पर होने वाला खर्च समाप्त हो गया। इस आटा चक्की से उन्हें प्रतिदिन लगभग 500 रु. से 700 रु. तक की नियमित आय होने लगी, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

इस पहल से हुए प्रमुख लाभ
● गांव में ही आटा पिसाई की सुविधा उपलब्ध हुई।
● 4-5 किलोमीटर दूर जाने की आवश्यकता समाप्त हुई।
● समय और परिवहन खर्च की बचत हुई।
● सौर ऊर्जा के कारण संचालन लागत लगभग शून्य रही।
● नियमित ग्राहकों से स्थायी आय का स्रोत बना।

अंततः, रावजी भाई डिंडोर की यह कहानी ग्रामीण भारत में आत्मनिर्भरता की एक जीवंत मिसाल है, जो यह संदेश देती है कि सही दिशा और दृढ़ संकल्प से सफलता अवश्य प्राप्त की जा सकती है।

वाग्धारा रेडियो 90.8 FM
वाग्धारा, कुपड़ा



अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें -
वाग्धारा रेडियो 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी - radio@vaagdhara.org

यह
"वातें वाग्धारा नी"
केवल
आंतरिक
प्रसारण है।